

## दुख को सुख में बदलने का जज्बा

पाण्डव जवाहर लाल नहरू न कहा था कि 'जावन विकास का सिद्धांत है, स्थिर रहने का नहीं। लगातार विकसित होना स्थिर अवस्था में रहने की आज्ञा नहीं देता।' जीवन मनुष्य रूप में मिलना बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस जीवन को उत्कृष्ट तरीके से जीने में ही सफलता है। जीवन को सकारात्मक व नेक विचारों के साथ आगे बढ़ाना ही जीवन सार्थक बनाता है। सभी व्यक्तियों का जन्म सामान्य तरह से होता है। अधिकतर बच्चे सामान्य व स्वस्थ शरीर के साथ इस दुनिया में आते हैं तो कई ऐसे होते हैं जो पैदायशी अशक्त होते हैं। इनमें उनका कोई दोष नहीं होता लेकिन विकसित होने के साथ-साथ जब ऐसे बच्चे अपने प्रति असामान्य व्यवहार देखते हैं तो बेहद आहत हो उठते हैं और तनाव के शिकार हो जाते हैं। आस्ट्रेलिया के निकोलस जेम्स वुजिसिक को बचपन में ही फोकोमिलिया नामक बीमारी हो गई थी, जिसके कारण उनके अंग विकसित नहीं हो पाए। इस कारण बचपन से उनके दोनों हाथ व पैर नहीं थे। जब उन्हें एहसास हुआ कि सामान्य लोग उन्हें अचरज व बेचारी से देखते हैं तो उन्हें तनाव हो गया। उन्होंने हिम्मत से काम लिया और स्वयं को निखारकर विश्व के महान स्पीकर के रूप में स्वयं को साबित कर दिया। इसी तरह अमेरिका की जेसिका कॉक्स बिना हाथों के पैदा हुई थी। उन्हें स्वीमिंग, जिम्नास्टिक, और ताइक्रांडो का शौक था। उनकी लगन व इच्छा ने उन्हें ताइक्रांडो में ब्लैक बेल्ट दिलवाई। वह अपने सभी काम पैरों से करती हैं। इनमें टाइपिंग व कम्प्यूटर चलाना भी शामिल है। जब भी कोई व्यक्ति किसी भयानक बीमारी अथवा विकलांगता का शिकार हो जाता है तो उसका अधिकतर समय ईश्वर से यह प्रार्थना करने में जाता है कि 'मैं ही क्यों?' यह 'मैं ही क्यों' की भावना नकारात्मक ध्वनि निकालकर आसपास के परिवेश को भी ऐसा ही बना देती है। प्रत्येक व्यक्ति में असाधारण शक्तियां छिपी हुई होती हैं। जोर का झटका लगने पर ये बाहर आती हैं और व्यक्ति की दुनिया ही बदल देती है। हेलेन केलर, प्रो. स्टीफन हॉकिंग, दीपा मलिक, मरियप्पन थंगवेलु, इरा सिंघल आदि अनेक ऐसे मजबूत व्यक्तित्व हैं जिन्होंने स्वयं का समय 'मैं ही क्यों' की शिकायत करने के बजाय 'मैं हूँ इसलिए हर वस्तु सकारात्मक हो जाती है' को अपने मन-मस्तिष्क में उतार कर सफलता के नए कीर्तिमान रचे। हर मनुष्य स्वस्थ, लंबा और खुशहाल जीवन चाहता है। कई बार कई लोगों के साथ ऐसी अनहोनी हो जाती है जो वे सोच भी नहीं सकते। लेकिन जीवन फिर भी चलता रहता है क्योंकि चलने का नाम ही जीवन है। जो रुक गया, समझो वह बिखर गया। मुसीबत सब पर आती है पर जो मुसीबत का सामना डट कर करता है वह कामयाबी की चोटी पर पहुंच जाता है। 'ट्वेल्थ अगेंस्ट द गाइड्स' के लेखक विलियम बोलिथो एक रेल दुर्घटना में अपना पैर गंवा चुके थे। उनका कहना था कि, 'अच्छी चीजों का लाभ उठाना जिंदगी में सबसे महत्वपूर्ण बात नहीं है।

असली महत्व तब है कि जब आप अपने नुकसानों से लाभ उठा सकें। इसमें बुद्धि की जरूरत होती है। इसी तरह बेन फोर्टसन ने 24 साल की आयु में एक दुर्घटना में अपने दोनों पैर गंवा दिए थे। यही बेन एक दिन जार्जिया राज्य के सेक्रेटरी बने। एक बार विम्बलडन खिलाड़ी आर्थर ऐशले को दंत चिकित्सा के समय ऐसा रक्त चढ़ा दिया गया जो एड्स से संक्रमित था। उनके प्रशंसक उनके लिए प्रार्थना करते और असंख्य पत्र भेजते। एक पत्र में एक व्यक्ति ने उनसे कहा, 'ईश्वर ने इस भयंकर बीमारी के लिए आप को ही क्यों चुना?' उस पत्र का जो जवाब आर्थर ने दिया, उसने एक सकारात्मक संदेश भी दिया। ऐशले ने कहा, 'पूरे विश्व में 5 करोड़ बच्चे टेनिस खेलना शुरू करते हैं, 50 लाख खेलना सीख पाते हैं, 5 लाख पेशेवर टेनिस खेल पाते हैं। पचास हजार लोग प्रतियोगिताओं तक पहुंच पाते हैं, 5 हजार ग्रैंड स्लेम तक, 50 विम्बलडन में, 04 सेमीफाइनल में और केवल 02 फाइनल में। इसके बाद इतने लोगों में विजेता कोई एक। जब विम्बलडन कप की टॉफी जीतने के बाद मैंने कभी ईश्वर से नहीं पूछा, 'मैं ही क्यों?' तो आज पीड़ा के समय भी मुझे नहीं पूछना चाहिए कि 'मैं ही क्यों?' जब हम रात्रि का आनंद अपने कार्यों को निपटा कर चैन से सोने में लेते हैं तो फिर दुख के समय भी हमें सुख के कार्यों का आनंद लेना चाहिए। मनुष्य में अपार शक्तियां छिपी हुई हैं। यदि वह इन शक्तियों को जाग्रत कर ले तो हर ओर सकारात्मकता की फुहार बरसती दिखाई देगी और फिर दुख में कभी कोई यह शिकायत करता नहीं मिलेगा कि 'मैं ही क्यों?'

# भारी पड़ेगी विपक्ष को उदासीनता

भारतय राजनातक पारदृश्य में जहां कांग्रेस और अन्य दल वर्षों बाद नींद से जागकर चुनाव जीतने के लिए नवीनतम कम्प्यूटर तकनीक अपना रहे हैं, जिसे मोदी सालों पहले कर चुके हैं वहीं खुद मोदी एक कदम और आगे बढ़ते हुए अपनी पार्टी के सदस्यों से आह्वान कर रहे हैं कि वे मोबाइल फोन से भाजपा की छवि लोगों के बीच बनाएं। उनकी इस सलाह के पीछे दो मुख्य कारण हैं। एक, यह कि मोदी का निष्कर्ष है कि चूंकि आने वाले समय में मतदान करने वालों का बड़ा हिस्सा नौजवान होगा, लिहाजा इनके झुकाव से चुनाव नतीजे प्रभावित होते हैं। दूसरा कारण यह कि मोदी ने बूझ लिया है कि आज के युवा अखबार रोज-रोज नहीं पढ़ते और अपनी सोच मोबाइल फोन और इंटरनेट पर आई जानकारी के आधार पर बनाते हैं। कुछ अंग्रेजी अखबारों ने इस नये चलन से कदमताल करते हुए गंभीर मसलों पर लेख वाले पत्रों की गिनती घटाकर युवाओं को लुभायमान लगने वाली खबरों को ज्यादा तरजीह देनी शुरू कर दी है। आने वाले दिनों में बहुत-से युवा पहली बार मतदान करने योग्य होंगे और वे अपने थके-हारे बूढ़े-बड़ों की अपेक्षा कहीं ज्यादा उत्साह से वोट के अधिकार का इस्तेमाल करेंगे। विपक्ष की समस्या किसी एक साझे नेता के नेतृत्व में लामबंद होने की है ताकि आपसी तालमेल से चुनाव जीतने की योजनाएं बनाकर इन्हें अमलीजामा पहनाया जा सके। जाहिर है इस काम की अपनी सीमाएं हैं, मसलन कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी का अपनी कम्प्यूटर-जीवी टीम के साथ दिवास्वप्न वाले बुलबुले में जीना। फिर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार संयुक्त विपक्ष का नेतृत्व करने वाला वैसा रुतबा भी नहीं बना पाए। तीसरे,

विराधा दल कद्र आर कइ राज्यों में चल रही भाजपाई सरकारों की गलतियों को एकजुट होकर धुनाने में असमर्थ रहे हैं। एक चतुर राजनीतिक रणनीतिकार के पास भाजपा और इसके सहयोगियों द्वारा पेश किए जाने वाले अजीबो गरीब प्रस्तावों से बहुत कुछ फायदा उठाने का मौका है। मसलन मंत्रिमंडल की यह सलाह कि रेस्तरां में बचने वाली जूटन की समस्या का हल है कि परोसे जाने वाले भोजन की मात्रा निर्धारित कर दी जाए। यह प्रस्ताव सुप्रीम कोर्ट द्वारा जानलेवा दुर्घटनाओं की संख्या घटाने के मंतव्य से राजमार्गों से पांच सौ मीटर की दूरी तक किसी रेस्तरां या होटल इत्यादि में शराब परोसे जाने पर लगाई गई पाबंदी के बाद आया है। पहले भी हमें यह चेताया जा चुका है कि गऊ-रक्षा की खातिर गोमांस से परहेज किया जाना चाहिए और वैध रूप से गाय-बैल ले जाने वाले लोगों से मारपीट करके स्वयंभू गऊ-रक्षक दल यह संदेश हमारे दिमागों में लगातार ठोक रहे हैं। हाल ही में बाकायदा परमिट लेकर गोवंश ले जा रहे एक मुस्लिम डेयरी वाले को गऊ-रक्षकों ने अधमरा कर दिया था और कुछ दिनों बाद अस्पताल में उसकी मौत हो गई। तिस पर तुरां यह कि बहुत से केंद्रीय और प्रांतीय स्तर के भाजपाई नेता आये दिन गड्डों को नुकसान पहुंचाने वाले लोगों की हडिड्यां तोड़ने की धमकी देते फिर रहे हैं। क्या यह भाषा लोकतंत्र की है? एक तरफ भाजपा के मार्गदर्शक आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भागवत राष्ट्रीय स्तर पर गऊ-वध पर पाबंदी लगावना चाहते हैं तो दूसरी ओर गाय का मांस खाने वाले देश के उत्तर-पूर्वी राज्यों में अपनी पार्टी का आधार बनाने को आतुर प्रधानमंत्री मोदी वहां इस मुद्दे पर जोर देने से बचते दिखाई दे रहे हैं। दिल्ली में हाल ही में

## आखिर गोरे क्यों होना चाहते हैं हम ?

दखा, अग्रज जिनका काला कहते थे, आज वही हम हिंदुस्तानी गोरेपन की क्रीम लगा-लगाकर कितने गोरे हैं। बच्चे ब्याह-शादी लायक हो जाएं तो लड़के वालों को गोरी लड़की चाहिए और लड़की वालों की भी कोशिश यही होती है कि लड़का गोरा मिल जाए। हालांकि गीत सांवरिया के गाए जाते रहे हैं पर उन गीतों में सांवरिया को भी गोरी ही चाहिए होती थी। खैर आज हम इतने गोरे हो गए हैं कि अफ्रीकियों को काले होने की गाली देते हैं। कलुआ या हल्सी कहकर उन्हें निढ़ाते हैं। जैसे अंग्रेज उन्हें भी और हमें भी निगगर ही कहते थे। हम इतने गोरे हो गए हैं कि अफ्रीकियों को सरेआम पीटते हैं। दिल्ली में, नोएडा में, सब जगह। वो तो शुरु है कि वे किराया अच्छा देते हैं, नहीं तो हम उन्हें किराए पर मकान भी न दें। हम यह भूल गए कि गांधी को गांधी इन्हीं अफ्रीका वालों ने बनाया था। दक्षिण अफ्रीका में ही उन्हें अंग्रेजों ने ट्रेन से इसलिए बाहर फेंक दिया था कि वे काले थे। सालों तक जेलों में रहने के बाद नेल्सन मंडेला जब बाहर आते हैं तो पहले भारत ही आते हैं क्योंकि यह गांधी का देश है। लेकिन अब उनकी संतानों को क्या पता कि हम इतने गोरे हो गए हैं कि भगवान को भी इस अहसान तले दबा देते हैं कि

## अतीत से जोड़ती है पांचाली

'पांचाली' साहित्यकार रमाकांत पाडय 'अकल' का औपन्यासिक कृति है जिसमें यज्ञसेनी पांचाल के जन्म से लेकर उसके साम्राज्य बनने तक की यात्रा का वर्णन है। कृति में पांचाली और पांचाली से संबद्ध लघुकथायें 30 अध्यायों के रूप में सम्मिलित हैं। 31वें अध्याय में समस्त कृति के प्रमुख बिन्दु उपसंहार के रूप में हैं। 'उद्धोधन' में दुष्यंत-शकुन्तला पुत्र भरत से लेकर जनमेजय तक के शासकों, राज्य-राजधानियों, उनके वर्तमान नामों की जानकारी मिलती है। पुस्तक में प्रसंगवश राजाओं की वंशावली का संक्षिप्त परिचय भी मिलता है। यह पुस्तक हमें तत्कालीन समाज में प्रचलित प्रथाओं यथा सती-प्रथा, भद्र-प्रथा, दान-प्रथा, श्राद्ध-प्रथा, नारी-ऋय-विक्रय प्रथा, दहेज-प्रथा, बहुपत्नी-प्रथा, अपशकुनों, विवाह-पद्धतियों तथा हिन्दू कर्मकांड की जानकारी उपलब्ध करवाती है। पुस्तक हमें तत्कालीन समाज में रह रहे आदिवासी लोगों के बारे में भी जानकारी देती है। पुस्तक हमें उस समय की राजनीति से भी अवगत करवाती है। यथा राजनीति, छल, छद्म और गोपनीयता पर आधारित होती है। (पृ. 74) पुस्तक में मानव-स्वभाव एवं मानव-वृत्तियों का खुलकर वर्णन किया गया है। उदाहरण प्रस्तुत है-हम जिसे भूलने का प्रयत्न करते हैं, वह उतना ही स्मृति-पटल पर उल्कीर्ण होता रहता है। पुस्तक में प्रस्तुत लोक-व्यवहार की बातें और जीवन-दर्शन हमें सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। पुस्तक में जनवाणी का महत्व बताते हुए कहा गया है-जनवाणी साक्षात् जनार्दन का कथन होती है। (पृ. 142)

## संक्षिप्त

**मेघ** : सस्कारी क्षेत्र से लाभ मिलने की संभावना है। कार्यभार बढ़ सकता है। माता से लाभ होने की संभावना है।  
**वृषभ** : किसी धार्मिक स्थल की यात्रा कर सकते हैं। मित्रों के शुभ समाचार मिलेगा। परेशान जाने की संभावनाएं उपस्थित होंगी। व्यापार में आर्थिक लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।  
**मिथुन** : नए कार्य का प्रारंभ तथा रोगोपचार प्रारंभ करना हितकर नहीं होगा। क्रोध की भावना को संयम में नहीं रखें। खर्च अधिक होगा। धन के संकट का अनुभव करेंगे।  
**कर्क** : व्यावसायिक क्षेत्र में आपको लाभ होगा। सेहत अच्छी रहेगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यात्रा या प्रवास का आयोजन कर सकेंगे।  
**सिंह** : आज का दिन मध्यम फलदायी होगा। दैनिक कार्य में विघ्न आ सकते हैं। अधिक परिश्रम के बाद भी प्राप्ति कम होने से हताशा का अनुभव हो सकता है।  
**कन्या** : आज के दिन आपको किसी भी तरह के कलह और चर्चा से दूर रह रहना चाहिए। आकस्मिक खर्च की संभावना है। विद्यार्थियों को पढ़ाई में बाधाएं आणीं।  
**तुला** : शारीरिक स्मृति का अभाव रहेगा। मानसिक व्यग्रता रहेगी। धन और कीर्ति की हानि हो सकती है। माता के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी।  
**वृश्चिक** : किसी नए कार्य का प्रारंभ कर पाएंगे। सधियों से सुख एवं आनंद की प्राप्ति होगी। आर्थिक लाभ एवं भाग्यवृद्धि के योग हैं। भाई-बहनों से लाभ होगा।  
**धनु** : असमंजस के कारण निर्णय लेना कठिन होगा। मन में व्यग्रता रहेगी। परिवारजनों के साथ मनमुटव न हो इसका ध्यान रखिएगा। कार्य में अपेक्षित सफलता न मिलने से निराशा होगी। निरर्थक खर्च होगा।  
**मकर** : कार्यालय में तथा व्यावसायिक स्थल पर आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पदोन्नति के योग हैं। गृहस्थजीवन में आनंद का वातावरण रहेगा। शारीरिक कष्ट के योग हैं, संभल कर रहें तथा गिरने से बचें।  
**कुंभ** : मानसिक परेशानी रहेगी। कोर्ट-कचहरी के मामले से दूर रहें। अनुचित स्थान पर पूंजी-निवेश न हो इसका ध्यान रखिएगा। क्रोध पर संयम रखिएगा। धन के खर्च का योग है।  
**मीन** : पारिवारिक तथा सामाजिक बातों में विशेष लिस रहेगे। मित्रों से भेंट होगी और उनके पीछे खर्च करना पड़ेगा। प्रत्येक क्षेत्र में आपको लाभ होगा।

## प्रेरक कथा - सुधार का रास्ता

एक डाकू संत के पास जाआग। कुछ दिना बाद वह फिर लौटकर आया। उसने संत से कहा- महाराज, मैंने बुराई छोड़ने की बहुत कोशिश की लेकिन छोड़ नहीं पाया। मुझे कोई और उपाय बताइए। संत बोले-अच्छा,

ऐसा करो कि तुम्हारे मन में जो भी बात उठे उसे कर डालो, लेकिन अगले दिन उसे दूसरे लोगों से कह दो। संत की बात सुनकर डाकू ने सोचा कि अब वह बेधड़क डाका डालेगा और दूसरों से कह देगा। कुछ दिन बाद वह फिर संत के पास आया और बोला- महाराज, आपने मुझे जो

उपाय बताया था, उसे मैंने बहुत आसान समझा था, लेकिन वह निकला बड़ा मुश्किल। बुरा काम करना जितना कठिन है, उससे कहीं अधिक कठिन है दूसरों के सामने अपनी बुराइयों को कहना। मैंने दोनों में से आसान रास्ता चुना है। मैंने डाका डालना ही छोड़ दिया है।

## शब्द सामर्थ्य

### शब्द सामर्थ्य -028(Rns)

- बाएं से दाएं  
 1. जल छिड़कना, राजा के सिंहासन रोहन का अनुष्ठान 4. मवाद, पीब (अं) 6. जाति 7. हाथ से धीरे-धीरे ठोंकना, थपकना 9. कमल रोग से ग्रसित व्यक्ति (उ.) 11. किरण 12. छौंक, तड़का 13. दुखदायी, दर्दनाक 15. विवाद, कहासुनी, तकरार 18. समूह, दल, समुदाय  
 19. दण्ड 20. काजल 22. अनाथ, निराश्रित, यतीम 24. दुख, शोक 25. एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, चक 26. राज्य का विदेश में प्रतिनिधि।  
**ऊपर से नीचे**  
 1. चित्रित्र, अद्भूत 2. अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना 3. वचन, वाणी 4. गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो 5. मुलायम सिंह की पार्टी का संक्षिप्त नाम 8.

## पिछले अंक का हल

|    |     |    |    |    |    |     |
|----|-----|----|----|----|----|-----|
| दि | क्र | त  | आ  | सा | न  | आ   |
| ल  | मी  | खि | सी | ख  | ना |     |
| म  | ज   | बू | र  | ह  | जा |     |
| स  | र्द | का | त  | रा | ना |     |
| र  |     | र  | वि | ह  |    |     |
| प  | ह   | ना | ना | ना | रा | ज   |
| ट  |     | क  | शि | श  | नी | ला  |
|    | र   |    | का | रा |    | य   |
| खा | ति  | र  | दा | री | त  | क्ष |
|    |     |    |    |    | क  |     |

## सू-दोकू

|                       |   |   |   |   |   |
|-----------------------|---|---|---|---|---|
| सू- दोकू क्र.028(Rns) |   |   |   |   |   |
| 3                     | 7 |   | 2 | 1 |   |
| 2                     |   | 9 | 4 |   |   |
| 7                     | 1 |   |   | 5 |   |
|                       | 1 | 5 | 2 |   | 7 |
| 5                     |   |   | 4 |   |   |
|                       | 4 | 1 | 8 | 5 |   |
|                       |   |   | 1 |   |   |
| 1                     | 5 | 3 | 9 |   |   |
| 2                     | 6 | 5 | 1 |   |   |

|  |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|--|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पिछले अंक का हल  |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
| 1. कुल 81 वर्ग हैं, जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनाता है।   | 8 | 9 | 5 | 1 | 6 | 3 | 2 | 4 | 7 |
| 2. हर खाली वर्ग में से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते हैं।   | 3 | 2 | 1 | 9 | 7 | 4 | 8 | 6 | 5 |
| 3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम, कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं। | 4 | 7 | 6 | 2 | 5 | 8 | 3 | 9 | 1 |
|  | 7 | 6 | 9 | 5 | 2 | 1 | 4 | 3 | 8 |
|  | 1 | 8 | 3 | 4 | 9 | 7 | 6 | 5 | 2 |
|  | 2 | 5 | 4 | 8 | 3 | 6 | 1 | 7 | 9 |
|  | 5 | 3 | 8 | 7 | 4 | 2 | 9 | 1 | 6 |
|  | 6 | 1 | 7 | 3 | 8 | 9 | 5 | 2 | 4 |
|  | 9 | 4 | 2 | 6 | 1 | 5 | 7 | 8 | 3 |